विचारहीन भावना और पाठ्यपुस्तक

❑ रोहित धनकर

राजस्थान के स्कूलों की नवीं कक्षा में कोर्स रीडर नाम की एक किताब पढ़ाई जाती है। यह किताब राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रकाशन है और अंग्रेजी विषय के पाठ्यक्रम का जरूरी हिस्सा है। पुस्तक की छपाई बहुत फूहड़ और कागज बहुत खराब है। किसी भी तरह से छात्रों के मन में उत्साह जगाने वाली नहीं है देखने में। अपनी सारी खराबियों के बावजूद पाठ्य पुस्तकें किसी जमाने में सम्मानित किताब दिखती थीं और कुंजियों से बहुत साफ तौर पर अलग होती थीं। उस पुरानी नजर से देखें तो यह किताब कुंजी बिरादरी की लगती है। इस किताब, कोर्स रीडर, में एक पाठ है, 'ड्रग अब्यूज एण्ड ऐल्कोहलिज्म: एन इंडोलॉजिकल पर्सपेक्टिव' नाम से । जाहिर तौर पर पाठ नशे की आदतों और उस पर भारतीय नजरिये की बात करता है। पर शीर्षक में 'इंडोलॉजिकल पर्सवेक्टिव' निहायत ही पोंगापंथी और लगभग अनुचित सा है, क्योंकि बात सिर्फ इतनी ही है कि कुछ पुराने मिथकीय और धार्मिक साहित्य में नशे का जिक्र है। यह कोई समेकित 'भारत विद्या परिप्रेक्ष्य' जैसा कुछ नहीं बनाता। पाठ की भाषा किसी भी नजर से अच्छी अंग्रेजी नहीं कही जा सकती। नवीं के छात्रों के लिए जैसी रवानगी और लालित्य चाहिये उसका तो इमसें भान तक नहीं है। पाठ उबाऊ और भाषणबाजी का नमूना है।

मैं यहां इस पुस्तक की समीक्षा नहीं कर रहा हूं। सिर्फ यह बताने की कोशिश कर रहा हूं कि इस पुस्तक की छपाई आदि तथा यह पाठ, दोनों ही शिक्षणशाास्त्र की नजर से निम्न स्तर के हैं। ऐसी पाठ्यसामग्री हम बेझिझक अपने बच्चों को देते हैं और कोई इस पर ऐतराज नहीं करता। हम जैसे शिक्षा में काम करने वाले लोगों के पास भी पाठ्यपुस्तकों पर सतत् अध्ययन और टिप्पणी की कोई व्यवस्था नहीं है। अत: पाठ्यपुस्तकों का स्तर शैक्षणिक और प्रस्तुति दोनों की दृष्टि से लगातार बिगड़ रही है। पर इस पुस्तक के उपरोक्त पाठ पर ऐतराज हुआ और उसे पाठ्यक्रम से निकाल दिया गया।

मैंने ऊपर इस पाठ को उबाऊ लेखन का नमूना कहा है तो इसको हटाने से मुझे सहमति ही होनी चाहिए। पर जिन कारणों से और जैसी समझदारी का परिचय देते हुए इसे हटाने की बात अखबारों में आयी है वह खीज, विषाद और चिन्ता पैदा करती है। विषाद शिक्षा के कर्णधारों के सोचने के घटिया और अनुपयुक्त स्तर के कारण और चिन्ता, ऐसे हाथों में शिक्षा जो दिशा ले सकती है उसके अंदाज से।

पाठ हटाने का कारण यह नहीं है कि उसमें लिखे तथ्यों को किसी ने गलत बताया हो या पाठ को शैक्षणिक दृष्टि से कुछ अनुचित कहा हो। बल्कि कारण है कि महापुरुषों के शराब पीने और नशा करने का जिक्र है। एक अखबार कहता है, ''इस अध्याय में श्री राम के अयोध्या लौटने पर भरत ने वानरों के समक्ष सुरा परोसी थी। इसे शिक्षा मन्त्री घनश्याम तिवाड़ी ने गंभीर माना और इस पाठ के लेखक तथा संयोजक को तत्काल प्रभाव से हटा दिया है।'' पुस्तक में जिन प्रकरणों के उदाहरण दिये हैं इनमें क्या वास्तव में बलराम, वानरों और भरत के साथियों के शराब पीने का वर्णन है ? यह सवाल किसी ने नहीं पूछा। अखबार ने भी नहीं। यदि ऐसे वर्णन हमारे सम्मानित साहित्य में उपलब्ध हैं तो उनको नवीं कक्षा के बच्चों की पुस्तक में देना उचित है या अनुचित ? यह सवाल भी किसी ने नहीं पूछा। बस लिखने वाले को हटा दिया, लेखकों को काली सूची में डाल दिया, प्रकाशन का अधिकार छीनने और कानूनी

कार्यवाही करने की धमकी दे डाली। क्यों ? क्योंकि बलराम को, वानरों को, भरत के साथियों को शराब का सेवन करने वाला लिखा है !

ये कैसी मानसिकता है ? निर्णय लेने की ये कैसी प्रक्रिया है ? इसके माध्यम से क्या संदेश दिया जा रहा है ? क्या ये हमारी शिक्षा के लिए शुभ संकेत हैं ? इन सवालों पर विचार करने की जरूरत है। पर पहले देख लें किताब में इस संदर्भ में आखिर लिखा क्या है।

पहले तो इस पर ध्यान दें कि पाठ में वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत और पुराणों में नशे और शराब का कई जगह जिक्र आया है यह स्थापित किया गया है। इस बात से इंकार करना मुश्किल है, इन ग्रंथों में, सारी दुनिया के ग्रंथों की तरह ही शराब का जिक्र सचमुच है। पर जो लोग अपनी आंखें बन्द करना चाहें, इन सम्माननीय ग्रंथों को सेंसर करना चाहें, उनकी बात अलग है। दूसरी बात यह कही गई है कि ये सारे ग्रंथ पीने को एक बुराई मानते हैं और उसके नुकसान को रेखांकित करते हैं। यह बात उतनी सही नहीं है जितनी यह जोर देकर कही गयी है। कई चीजें ऐसी होती हैं जिनकी बुराई करते-करते बुराई करने वाले सेवन भी करते हैं। शराब सदा ही ऐसी चीज रही है, यह छद्म इन ग्रंथों में भी है और आज के समाज के कर्णधारों में भी।

रामायण और महाभारत के बारे में पुस्तक में लिखा है '' इसी तरह रामायण, महाभारत, पुराणों और आयुर्वेद में नशे से समाज को होने वाले नुकसानों का वर्णन है।... (नशा उनको) शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टि से बर्बाद करके रख देता है।... (रामायण में) नशे की उपलब्धता और सेवन का यहां तक वर्णन है कि ऋषि भी अपने राजसी मेहमानों की आवभगत इससे करने में नहीं झिझकते थे। उदाहरण के लिए, भरत मिलाप के वक्त, भरत के साथ आए लोगों के लिए ऋषि भारद्वाज के आश्रम में शराब की व्यवस्था जरूरी समझी गयी थी।'' ऐसी ही कुछ और बातें वानरों, सुग्रीव आदि के बारे में हैं।

महाभारत के बारे में ''भगवान कृष्ण के बड़े भाई बलराम के बारे में कहा जाता है कि वह शराब का बहुत शौकीन था। इसलिए शराब का संस्कृत में नाम 'हल प्रिया' भी है। महाभारत के मौसूल पर्व, श्रीमद्भागवत और विष्णु पुराण से यह साफ है कि नशे की आदत ही यादव वंश के समूल नाश का कारण बनी थी। महाभारत के आदि पर्व से हमें पता चलता है कि क्षत्रियों में नशे की लत आम बात थी और यहां तक की ब्रह्माणों में भी इसे त्याज्य नहीं समझा जाता था।''

अब सवाल यह उठता है कि इसमें ऐसा क्या है कि बबाल किया जाये ? ये सब किसकी भावनाओं को ठेस पहुंचाता है और क्यों ? क्या ये ग्रंथ और जिनका जिक्र हुआ है वे महापुरूष उनकी बपौती हैं जिनकी भयभीत भावनाएं सत्य की झलक मात्र से आहत हो जाती हैं ? क्या ये ग्रंथ और महापुरूष लेखक के भी उतने ही नहीं जितने बबाल मचाने वालों के ? क्या इन ग्रन्थों की बातों को पढ़कर नवीं कक्षा के छात्र, जो कम से कम पन्द्रह-सोलह वर्ष के होंगे, भले-बुरे का भेद किये बिना केवल अनुसरण करने लगेंगे ? क्या पाठ इन उदाहरणों को शराब के सेवन को बढ़ाने के लिए पेश करता है ? या उसकी बुराई दिखाने के लिए ? महान ग्रंथों की नैतिकता पर क्या सवाल नहीं उठते हैं ? क्या इन ग्रंथों को भी बैन कर दिया जाये ? क्या इनको हमारी नई उगती हुयी विचार विरोधी संस्कृति में सेंसर कर दिया जाये ? ये और ऐसे बहुत सारे सवाल इस पाठ पर बवाल करने वालों से पूछे जाने चाहियें। उन्हें इनका उत्तर देने को बाध्य किया जाना चाहिये।

लेकिन इस पाठ में कुछ और भी है, जिसका जिक्र अखबारों में बहुत ही नजर बचाकर किया गया है। कहीं पाठ को हटाने के पीछे असली कारण वो हिस्सा तो नहीं है ? आइये अब पाठ के उस हिस्से पर एक नजर डालते हैं, '' मनुस्मृति के अनुसार साधु की हत्या, शराब पीना, चोरी और उम्र दराज औरत से नाजायज संबंध, चार महापाप हैं। और ऐसे पापियों से दोस्ती या सहयोग करना पांचवां महापाप है। इससे सिद्ध होता है कि हमारी सरकार जो नशीली चीजों के अनैतिक धन्धे से राजस्व कमाने में लिप्त है, वे लोग जो इस धन्धे से धन कमाने में लगे हैं, नशे की चीजों को मुहैया कराने वाले

होटलों के मैनेजर और नशा परोसने के काम में लगे वेटर आदि, सब महापापी हैं।'' मनुस्मृति के हवाले से हमारी पूजा-पाठ धर्मी धार्मिक अंध विश्वास की हिमायती सरकार को पापी कहा जा रहा है ! अर्थात् मियां की जूती मियां के सर। मुझे लगता है पाठ पर बबाल के असली कारण ये ही हैं।

एक बात और। यह पूरा पाठ उबाने वाला होने के साथ-साथ विचार, विश्लेषण और विवेकसम्मत चिंतन को बढ़ावा देने वाला भी नहीं है। यह नशे की बुराई को स्थापित करने के लिए छात्रों को विचार करने के लिए, अपना मत बताने के लिए, उसके पक्ष-विपक्ष में कारण एवं तर्क दने के लिए आमंत्रित नहीं करता। बस शास्त्रों के आदेश से उनके मन में यह बिठा देना चाहता है कि नशा बुरी बात है। आशय फिर वही है सोचो मत, शास्त्र की मानो। इस नजर से यह पाठ इसे बैन करने वालों की लाइन का ही है। पर बिना विचारे; तथ्यों की जानकारी के बिना, केवल कुछ चिल्लाने वाले लोगों की भावनाओं के हवाले से शैक्षिक निर्णयों की परम्परा बहुत खतरनाक है। यह व्यवहार और अभिव्यक्ति पर पाबंदी है। शिक्षा में काम करने वाले लोगों को विचार और विश्लेषण की पूरी स्वायत्तता की रक्षा के लिए सजग रहना होगा। ◆